गुरु नानक – सबद ३९
करम खंड की बाणी जोरु ॥
जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

सार: चेतना के विभिन्न क्षेत्र व्यक्तिगत परिवर्तन और आत्म-प्राप्ति के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं। प्रत्येक स्तर को सचेत रूप से समझने से स्वयं और दूसरों के साथ गहरे संबंध में वृद्धि हो सकती है। हमारे इरादे हमारे कर्मों और उनके परिणामों के पीछे प्रेरक शक्ति हैं। हमारे भीतर विचार का प्रवाह हर पल चल रहा है, जो बदले में, अनुग्रह या अपमान की भावना पैदा करता है। सकारात्मक विचारों से किए गए कार्यों को 'अच्छे इरादे' माना जाता है। इसका अर्थ है सकारात्मक गुणों का पालन करना जो सर्वशक्तिमान की भलाई को अनुग्रहित करते हैं।

करम खंड की बाणी जोरु ॥

करम के खंड में सकारात्मक इरादा सबसे शक्तिशाली होता है।

तिथै होरु न कोई होरु ॥

इस सद्गुण के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है न ही सदाचारी होने का कोई और तरीका है।

तिथै जोध महाबल सूर ॥

सकारात्मक इरादे वाले बहादुर, शक्तिशाली सूरमा होते हैं।

तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥

ऐसे प्राणी एकता के सार से ओत-प्रोत होते हैं।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥

असंख्य दिव्य प्राणी अपने भीतर रहने वाली सर्वव्यापी अदृश्य चेतना की प्रशंसा करते हैं।

ता के रूप न कथने जाहि ॥

उसके स्वरूप का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥

वह कभी भी आध्यात्मिक मृत्यु का अनुभव नहीं करते हैं, और नकारात्मकता उन्हें धोखा नहीं दे सकती है।

जिन कै रामु वसै मन माहि ॥

जिनके हृदय में दिव्यता का वास है।

तिथै भगत वसहि के लोअ ॥

जो हृदय मानवता को आश्रय देते हैं वह आध्यात्मिक निवास के समान हैं।

करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥

ऐसे हृदयों में शाश्वत आनंद का अनुभव होता है और सत्य का साक्षात् दर्शन होता है।

सच खंडि वसै निरंकारु ॥

सत्य के खंड में निराकार ब्रह्मांडीय ऊर्जा निवास करती है।

करि करि वेखै नदरि निहाल ॥

अदृश्य सर्वव्यापी चेतना सृष्टि के रूप में प्रकट होती है और आनंद से इसे देखती है।

तिथै खंड मंडल वरभंड ॥

ब्रह्मांड में कई दायरे और कई खंड मौजूद हैं।

जे को कथै त अंत न अंत ॥

उनकी रचना असीमित होने के कारण उनके विस्तार का वर्णन नहीं किया जा सकता।

तिथै लोअ लोअ आकार ॥

विविध रूप हैं जो विविध क्षेत्रों में निवास करते हैं।

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥

जैसा कि प्रकृति के नियमों द्वारा निर्धारित किया गया है, एक रूप बनता है जो तदनुसार अपनी गतिविधियाँ करता है।

वेखै विगसै करि वीचारु ॥

सृष्टि को आनंद के साथ देखना,स्वयं और अस्तित्व पर विचार करना।

नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

नानक कहते हैं कि आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से विकास के इस चरण का वर्णन करना लोहे के समान कठिन है। (३७)

तत्त्व: गुरु नानक के अनुसार, नेक इरादों से उपजे सभी करम सबसे शक्तिशाली होते हैं। इन क्रियाओं को चिंतनशील अभ्यास के माध्यम से निर्देशित किया जाता है, जिनमें सार्वभौमिक वास्तविकता और किसी के अस्तित्व से संबंधित विचारों का अवलोकन और विश्लेषण करना

सम्मिलित है। ऐसा करने से विकास की एक ऐसी सुखद स्थिति प्राप्त हो सकती है जिसका कोई अनुभव तो कर सकता है लेकिन शब्दों में वर्णन करना असंभव है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com